संस्कृति मंत्रालय
भारत सरकार

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र

(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत्त संस्थान)

सीसीआरटी समाचार

CCRT Newsletter

खण्ड 2 • अंक 4 • अप्रैल 2024

Volume 2 • Issue 4 • April, 2024

कला मंथन

यूनानी कला में हमें कल्पना और बुद्धि का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। उनका सौंदर्य केवल कल्पना तक सीमित नहीं था बल्कि वे बौद्धिक चिंतन में आनंद की प्राप्ति करते थे। सौंदर्य से संबंधित समस्याओं का निराकरण करते समय वे बुद्धि का पूर्णरूपेण प्रयोग करते थे। नित्य जीवन की तरह उनके मंदिरों में भी मूल तत्त्व के रूप में 'सुंदर' विराजमान था। वे सौंदर्यवादी थे। अतएव सौंदर्यरहित धर्म की वे कल्पना भी नहीं कर सकते थे।

यूनानियों को धर्म के प्रति श्रद्धा थी। उन्होंने अपने जीवन में कला को सबसे ऊँचा स्थान दिया। वहां धर्म से भी अधिक कला प्रभावी रही। पृथ्वी एवं स्वर्ग की यह कल्पना उन्हें स्वीकार थी। उनके मतानुसार देवता एवं मनुष्य-गण इस मार्ग से भ्रमण कर सकते थे। देवता और मनुष्य की उत्पत्ति एक ही 'माता' से हुई, यह उनकी धारणा थी। किन्तु वे यह भी मानते थे कि दोनों की शक्ति तथा नियति में अंतर है।

यूनानी अमूर्तता पर विश्वास नहीं रखते थे। उनके देवता का स्वरूप निश्चित था। उनका अपना चरित्र था और वह स्पष्ट रूप से दिखाई देता था। वास्तविक रूप से वे ईश्वर का ही रूप हैं, ऐसी उनकी मान्यता थी। उन्होंने देवता का चित्रण उसी रूप में किया, जिस रूप में वे खुद को देखते थे। उन्होंने देवताओं की कल्पना सुखी, चिंतारहित और चिरंतन स्वरूप में की।

राजा तथा पुजारियों ने जो एक प्रकार से सीमा रखी थी, उसे पार करके यूनानी कलाकारों ने विचार किया और कला-माध्यम से अपनी बात रखी। उनकी कला स्वच्छ, बुद्धियुक्त और सत्यता से परिपूर्ण थी। उसमें 'असंबद्धता' नहीं थी। उन्होंने अपनी कला के द्वारा मुख्यतः मनुष्य और उसके क्रिया-कलाप, उसके आदर्श एवं उपलब्धियों का दर्शन कराया।

यूनानी कलाकार में सौंदर्य के प्रति जागरुकता थी। ऐसी जागृति के कारण वहां धर्म की उत्पत्ति हुई। काव्य के माध्यम से उन्होंने दिव्य शक्ति का उद्घाटन किया। ग्रीक लोगों का विश्वास बैठना चाहिए, इस उद्देश्य को लेकर ग्रीक कवि होमर ने देवताओं को रूप दिया। उन्हें गुणों से अलंकृत किया। किन्तु उन पर यह भी लांछन लगा कि उन्होंने राज्य के नागरिकों को पथभ्रष्ट किया। यह आरोप उन पर दार्शनिकों ने लगाया।

ग्रीक देवता अदृश्य रूप में नहीं थे। उनके देवता अलौकिक नहीं थे। वे प्रकृति का ही एक अंग थे। अपनी कला में नवीनता रहे, इस उद्देश्य से उन्होंने कल्पना का आधार लिया तथा अपनी कला को किसी अन्य माध्यम में आविष्कृत करने का हमेशा प्रयास किया। इस प्रकार से ग्रीक में अनुकरण के माध्यम से सौंदर्य का पुनर्जन्म होता दिखाई देता है। किन्तु यह भी वास्तविकता है कि इस प्रकार से आविष्कृत कला का मूल्यांकन मात्र वास्तविकता और उपयोगिता के आधार पर होता था। ग्रीक दार्शनिकों ने अनुकरण को अच्छा नहीं माना। आश्चर्य की बात है कि यूनानी जिस कला को आदर्श और सुंदर मानते थे, उसी कला को वे अनुकरण मानते थे।

डॉ. विनोद नारायण इन्दूरकर
अध्यक्ष, सीसीआरटी

प्रमुख गतिविधियों की झलकियाँ

ACTIVITIES CARRIED OUT IN THE MONTH OF APRIL 2024
अप्रैल 2024 की प्रमुख गतिविधियाँ

स्वच्छता कार्य योजना/WORKSHOP ON SWACHH BHARAT MISSION:

स्वच्छता पखवाड़ा के तहत कार्यशाला 16-30 अप्रैल, 2024 तक सीसीआरटी मुख्यालय और चार क्षेत्रीय केंद्र हैदराबाद, उदयपुर, गुवाहाटी और दमोह में आयोजित की गई। विवरण इस प्रकार है:

क्रम सं.	स्थान	अवधि	गतिविधि
1.	सीसीआरटी मुख्यालय नई दिल्ली	18, 22, 25, 30 अप्रैल 2024	स्वच्छ भारत मिशन और अपशिष्ट प्रबंधन पर व्याख्यान, वेक्टर जनित रोगों की रोकथाम और नियंत्रण के लिए स्वच्छ भारत मिशन पर कार्यशाला, हस्ताक्षर अभियान तथा श्रमदान गतिविधि
2.	क्षेत्रीय केंद्र हैदराबाद	18, 22, 24, 26, 30 अप्रैल 2024	स्वच्छता पर व्याख्यान, हस्ताक्षर अभियान तथा श्रमदान गतिविधि
3.	क्षेत्रीय केंद्र उदयपुर,	18, 22, 24, 25, 29, 30 अप्रैल 2024	पृथ्वी की सुरक्षा और स्वच्छता पर व्याख्यान, हस्ताक्षर अभियान, हावभाव और मूकाभिनय कार्यक्रम तथा श्रमदान गतिविधि
4.	क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी	16, 18, 23, 25 अप्रैल 2024	प्रदर्शनात्मक शिक्षा पर एक सत्र, अपशिष्ट पदार्थों पर शिल्प सत्र, हस्ताक्षर अभियान तथा श्रमदान गतिविधि
5.	क्षेत्रीय केंद्र दमोह	18, 24, 30 अप्रैल 2024	छात्रों के लिए स्वच्छता आधारित गीत, पेंटिंग कार्यशाला तथा श्रमदान गतिविधि

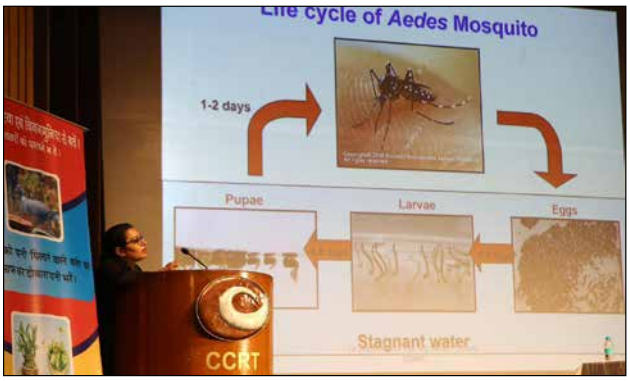

डॉ. विनोद नारायण इंदूरकर ने 22.12.2022 को सीसीआरटी के 11वें अध्यक्ष के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। बीते लगभग एक वर्ष के दौरान इन्होंने भारतीय संस्कृति और कला से जुड़े तमाम अलग-अलग क्षेत्रों और उनकी सबसे बड़ी हस्तियों (Legends) के सम्मान में सीसीआरटी मुख्यालय के परिसर में कुछ पहले से स्थापित महत्वपूर्ण स्थानों को इन हस्तियों का नाम दिया। साथ ही इन्होंने अपनी अभिनव सोच और सुरुचिपूर्ण कलात्मक दूरदृष्टि का प्रयोग करते हुए कई नए स्थानों के निर्माण के लिए भी पूरे सीसीआरटी परिवार को प्रेरित-प्रोत्साहित किया। अपने मासिक न्यूजलेटर के इस अंक में हम मुख्यालय परिसर में स्थापित और निर्माणाधीन इन प्रमुख स्थानों और उन हस्तियों के बारे में एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं, जो न केवल पाठकों के लिए जानकारी से भरा है बल्कि सीसीआरटी की ओर से भारतीय कला और संस्कृति के अग्रणी संवाहकों के लिए एक श्रद्धांजलि भी है।

संस्थापक कमला देवी चट्टोपाध्याय की प्रतिमा की स्थापना

मार्च 2023 में सीसीआरटी मुख्यालय प्रांगण में इसकी संस्थापक और प्रथम अध्यक्ष कमला देवी चट्टोपाध्याय की प्रतिमा का 9वें विरासत कमला देवी समारोह के दौरान अनावरण किया गया। ये भारत की अग्रणी समाज सुधारक, स्वतंत्रता सेनानी और भारतीय कला तथा संस्कृति – विशेषकर भारतीय हस्तकला के क्षेत्र में क्रांति लाने वाली प्रसिद्ध गांधीवादी थीं । इन्हें समाज सेवा के लिए वर्ष 1955 में पद्मभूषण, सामुदायिक नेतृत्व के लिए 1966 में रेमन मैग्सेसे और 1987 में देश के दूसरे सबसे बड़े नागरिक सम्मान – पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। सीसीआरटी के अलावा इन्हें राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एनएसडी), संगीत नाटक अकादमी, नेशनल कॉटेज इंडस्ट्रीज एम्पोरियम और क्राफ्ट काउंसिल ऑफ इंडिया जैसे देश के प्रमुख सांस्कृतिक और हस्तशिल्प संस्थाओं की स्थापना का भी श्रेय जाता है। स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता के बाद भारत के इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण महिलाओं के योगदान को जब भी याद किया जाएगा, कमला देवी चट्टोपाध्याय का नाम उस सूची में हमेशा अग्रणी रहेगा।

भरतमुनि नाट्यगृह

सीसीआरटी के मुख्यालय परिसर स्थित मुख्य सभागार को वर्ष 2023 में भारत के प्राचीन ऋषि और नाट्यशास्त्र के सबसे बड़े विद्वान तथा प्रणेता भरतमुनि के नाम पर समर्पित किया गया। इनके द्वारा रचित ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' भारतीय नाट्य और काव्यशास्त्र का आदिग्रंथ है। इस ग्रंथ में नाट्यशास्त्र, संगीतशास्त्र, छंदशास्त्र, अलंकार, रस आदि का आद्योपांत वर्णन किया गया है।

325 सीट वाला यह भरतमुनि नाट्यगृह (मुख्य सभागार) आधुनिक प्रकाश एवं ध्वनि व्यवस्था और वातानुकूलन सुविधा से लैस है और इसमें पूरे वर्ष भर नाटक, कवि सम्मेलन, संगीत (गायन, वादन), नृत्य प्रस्तुतियों जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ-साथ प्रशिक्षण और कार्यशाला कार्यक्रमों के अलावा सीसीआरटी के सभी बड़े आधिकारिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं।

भवभूति नाट्यगृह

सीसीआरटी मुख्यालय परिसर में एक और भी सभागार है जिसे वर्ष 2023 में ही संस्कृत के महान कवियों और श्रेष्ठ नाटककारों में शुमार भवभूति के नाम पर समर्पित किया गया। इनके नाटकों को संस्कृत के सर्वश्रेष्ठ नाटककार कालिदास की रचनाओं के समतुल्य माना जाता है।

172 सीट वाला भवभूति नाट्यगृह नामक यह दूसरा सभागार भी आधुनिक प्रकाश एवं ध्वनि व्यवस्था और वातानुकूलन सुविधा से लैस है। इस सभागार में भी पूरे वर्ष भर सांस्कृतिक कार्यक्रम और आधिकारिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते रहते हैं।

राजा रवि वर्मा कला वीथिका

सीसीआरटी मुख्यालय परिसर में पहले से एक कला दीर्घा (Art Gallery) स्थापित थी। इसे वर्ष 2023 में नई शक्ल दी गई और भारत के महानतम चित्रकार माने जाने वाले राजा रवि वर्मा के नाम पर इसका नामकरण राजा रवि वर्मा कला वीथिका किया गया। राजा रवि वर्मा की कृतियों में भारतीय साहित्य और संस्कृति के पात्रों के चित्रण पाए जाते हैं, जिनमें हिंदू महाकाव्यों और धर्मग्रंथों पर बनाए गए चित्रों की प्रमुखता है।

इस कला दीर्घा में विभिन्न कलारूपों की कलाकृतियां प्रदर्शन के लिए रखी हुई हैं और यहां समय-समय पर विषय विशेष पर केंद्रित कला प्रदर्शनियां भी आयोजित की जाती रहती हैं।

रविन्द्रनाथ टैगोर कला क्षेत्र

सीसीआरटी मुख्यालय परिसर के भूतल पर खुले हॉलनुमा क्षेत्र में वर्तमान अध्यक्ष डॉ. विनोद नारायण इंदूरकर ने अपनी संकल्पना को आकार देते हुए रविन्द्रनाथ टैगोर कला क्षेत्र का नाम दिया। साहित्य के क्षेत्र में भारत के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता गुरुदेव टैगोर के नाम पर आधारित इस कला क्षेत्र की दीवारों पर एक ओर जहां भगवान विष्णु के दस अवतार-रूपों का चित्रण है तो दूसरी ओर मुंगेर (बिहार) की मंजूषा शैली व सप्तर्षियों की पेंटिंग अंकित है। इसके अलावा इस कला क्षेत्र में बोधायन, ऋषि भारद्वाज, ऋषि कणाद, महर्षि सुश्रुत, आचार्य चरक, नागार्जुन, आर्यभट्ट, डॉ. जगदीश चंद्र बसु, प्रफुल्लचंद्र राय, चन्द्रशेखर वेंकट रमण, मेघनाद साहा, सत्येन्द्रनाथ बोस, होमी जहांगीर भाभा, असीमा चटर्जी, हरगोविंद खुराना जैसे भारत के प्रख्यात वैज्ञानिकों की तस्वीरें भी लगी हैं।

ए.पी.जे. अब्दुल कलाम सम्मेलन कक्ष

सीसीआरटी मुख्यालय परिसर के भूतल पर स्थित सम्मेलन कक्ष को वर्ष 2023 में भारत के ग्यारहवें निर्वाचित राष्ट्रपति और महान वैज्ञानिक डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम का नाम दिया गया। इस सम्मेलन कक्ष में ऑनलाइन और प्रत्यक्ष दोनों तरीके से सीसीआरटी की उच्च स्तरीय आधिकारिक बैठकें और प्रतिभागियों की कम संख्या वाले कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

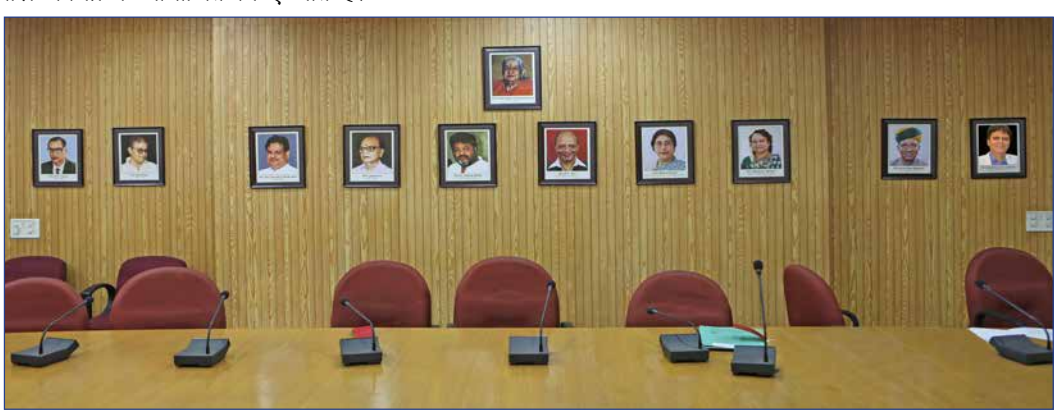

अश्व घोष मुक्ताकाश कला मंच

सीसीआरटी मुख्यालय परिसर के पीछे स्थित लॉन के एक कोने में वट वृक्ष और अशोक के पेड़ों के बीच एक Open Air Stage का निर्माण किया जा रहा है। वर्तमान अध्यक्ष डॉ विनोद नारायण इंदूरकर की संकल्पना पर आधारित इस मंच को अश्व घोष मुक्ताकाश कला मंच का नाम दिया गया है जो भारतीय इतिहास के प्रसिद्ध बौद्ध महाकवि तथा दार्शनिक अश्व घोष को समर्पित है।

आने वाले समय में इस मंच पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाने की योजना है, जहाँ दर्शक व श्रोतागण पूरे प्राकृतिक परिवेश में खुले आसमान के नीचे इनका आनंद उठाएंगे।

इसके अलावा इसी लॉन के दूसरे कोने में ग्रामीण भारत की प्राचीन शैली में वर्ष 2023 में एक खुली कुटिया (Hut) का निर्माण कराया गया। इस स्थान पर सीसीआरटी के विभिन्न कार्यक्रमों में आए हुए कलाकार, शिल्पकार अपनी-अपनी विधाओं का अभ्यास करते हैं।

कैंटीन (भोजनालय) परिसर

मुख्यालय परिसर स्थित कैंटीन (भोजनालय) परिसर को भी नया रंग-रूप दिया जा रहा है और इस स्थान पर भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्वों का समावेश किया जा रहा है।

भोजनालय द्वार

कैंटीन (भोजनालय) परिसर

कबाड़ से कला (Waste to Art)

डॉ. विनोद नारायण इंदूरकर ने सीसीआरटी के अध्यक्ष का पदभार संभालने के बाद बीते लगभग एक वर्ष के दौरान मुख्यालय परिसर के परिवेश (Ambience) में अपनी दूरदृष्टि व व्यावहारिक सोच की बदौलत इसे शानदार तरीके से सुसज्जित करा दिया है। Waste to Art (कबाड़ से कला) के उनके Vision का भरपूर इस्तेमाल करते हुए मुख्यालय परिसर में बेकार पड़ी वास्तुओं का उपयोग करके एक-से-एक सुंदर कलाकृतियों का निर्माण किया गया है, जिससे परिसर की खूबसूरती देखते ही बनती है। इन कलाकृतियों की कुछ तस्वीरें प्रस्तुत हैं :

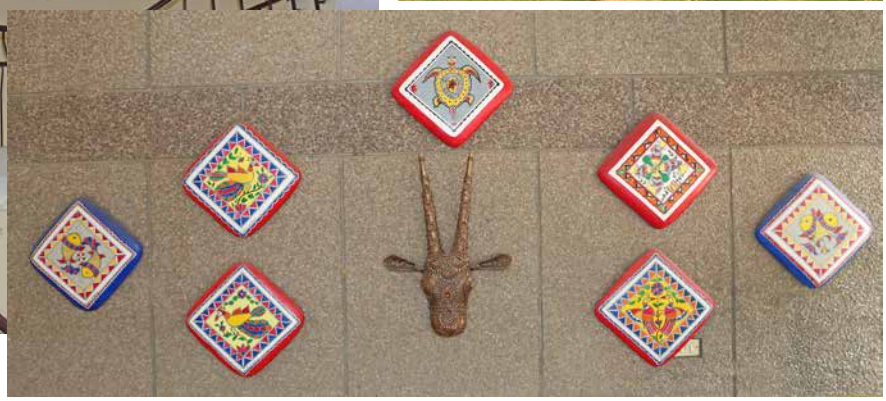

रानी दुर्गावती नाटक का मंचन

सीसीआरटी के वर्तमान अध्यक्ष डॉ विनोद नारायण इंदूरकर एक प्रसिद्ध नाटककार भी हैं । इनकी संकल्पना और निर्देशन में भारतीय इतिहास की महानायिका, गोंडवाना की रानी दुर्गावती की 500वीं जयंती के अवसर पर उनके जीवन पर आधारित महानाटक 'कुशल वीरांगना रानी दुर्गावती' का मंचन 14 अक्टूबर 2023 को सेंट्रल विस्टा, कर्त्तव्य पथ, इंडिया गेट, नई दिल्ली में किया गया। इस महानाटक का भविष्य में देश के अलग-अलग शहरों में प्रमुख ऐतिहासिक स्थानों पर मंचन किए जाने की योजना है ।

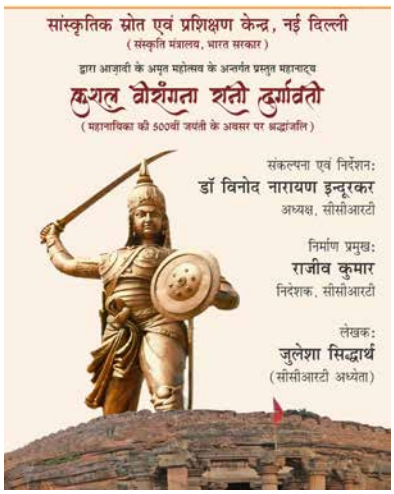

कहानी नारी शक्ति की-द्रौपदी से द्रौपदी तक नाटक का मंचन

आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में भारत के इतिहास की 75 सबसे महत्वपूर्ण महिलाओं के योगदान को रेखांकित करने वाला महानाटक 'कहानी नारी शक्ति की - द्रौपदी से द्रौपदी तक' भारतीय नारी के अद्भुत पराक्रम की यशोगाथा है। डॉ. विनोद नारायण इंदूरकर की संकल्पना और निर्देशन में 08 मार्च 2024 को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर मुख्यालय परिसर स्थित भरतमुनि नाट्यगृह में इस नाटक का मंचन किया गया। महाभारत की नायिका द्रौपदी से लेकर हमारी वर्तमान राष्ट्रपति महामहिम द्रौपदी मुर्मू तक 75 महिलाओं के माध्यम से भारत के इतिहास में महिलाओं के योगदान का बखान करने वाले इस नाटक का भविष्य में देश भर के प्रमुख शहरों में मंचन किए जाने की योजना है ।

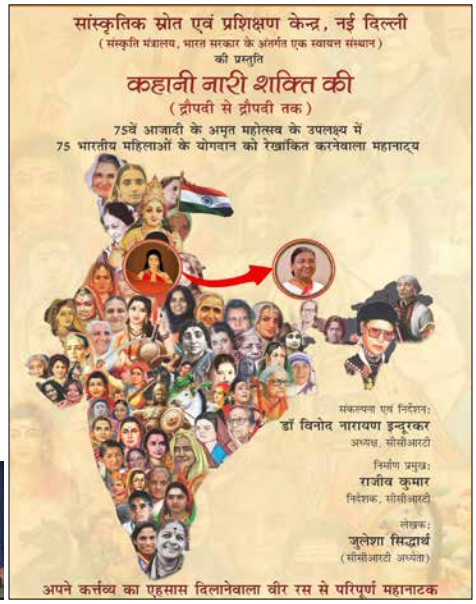

सीसीआरटी मुख्यालय, नई दिल्ली:	सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र:
डॉ. विनोद नारायण इंदूरकर, अध्यक्ष, सीसीआरटी	**श्री वाई. चन्द्र शेखर,** परामर्शक सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, हैदराबाद, तेलंगाना
श्री राजीव कुमार, निदेशक, सीसीआरटी	**श्री ओम प्रकाश शर्मा,** परामर्शक सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर, राजस्थान
डॉ. राहुल कुमार, उप निदेशक (प्रशिक्षण)	**श्री निरंजन भुइयां,** परामर्शक सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी, असम
डॉ. संदीप शर्मा, उप निदेशक (मूल्यांकन)	**श्री के.एस.एल. गणेश,** उप निदेशक (प्रशासन) एवं प्रभारी सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, दमोह
श्री राजेश भटनागर, उप निदेशक (वित्त)	
श्री दिबाकर दास, उप निदेशक (छात्रवृत्ति एवं अध्येतावृत्ति)	
श्री के.एस.एल. गणेश, उप निदेशक (प्रशासन)	
श्री मनीष कुमार, हिन्दी अधिकारी	

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत्त संस्थान)
15ए, सेक्टर-7, द्वारका, नई दिल्ली - 110075 भारत
दूरभाष : 011-25309300 ई-मेल : dir.ccrt@nic.in वेबसाइट : www.ccrtindia.gov.in

क्षेत्रीय केन्द्र
सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
1-118/सीसीआरटी, सर्वे नं. 64
(गूगल ऑफिस के निकट),
मधापुर, हैदराबाद, तेलंगाना
पिन कोड:- 500 084
दूरभाष: +91+040+23111910/23117050
ई-मेल: rchyd.ccrt@nic.in

क्षेत्रीय केन्द्र
सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
58, जुरीपार, पंजाबारी रोड
गुवाहाटी, असम
पिन कोड: 781037
दूरभाष: +91-0361-2335317
ई-मेल: rcgwt.ccrt@nic.in

क्षेत्रीय केन्द्र
सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
हवाला खुर्द, बड़गाँव,
उदयपुर, राजस्थान
पिन कोड: 313011
दूरभाष: +91+0294-2430764
ई-मेल: rcud.ccrt@nic.in

क्षेत्रीय केन्द्र
सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
पुरानी कलेक्ट्रेट बिल्डिंग,
दमोह, मध्य प्रदेश
पिन कोड:- 470661
ई-मेल: rcdamoh-ccrt@gov.in

@CCRTDelhi @ccrtofficialchannel ccrtnewdelhi @CCRTNewDelhi @ccrtofficial

संरक्षक: **डॉ. विनोद नारायण इंदूरकर**, अध्यक्ष, सीसीआरटी *मार्गदर्शक:* **श्री राजीव कुमार,** निदेशक, सीसीआरटी
संपादक: **मनीष कुमार**, हिंदी अधिकारी *प्रकाशन सहयोग:* **श्री रमनीक कुमार**, प्रकाशन सहायक एवं **श्री विरेन्द्र कुमार**, ग्राफ़िक डिज़ाइनर